मनुष्य बनो

अक्तूबर
१९७६

वा० मू०
६-००

शरणागति,

शुभ संकल्प,

क्षमा,

प्रेम,

निष्काम कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जावेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष ३०	कार्तिक सं० २०३६ वि० अक्टूबर, १९७९	संख्या १

दीपमालिका

की

मंगलमय वेला में हम आपका हार्दिक अभिनन्दन
करते हुये नवीन वर्ष के लिये आपके
सुख समृद्धि एवम् सफलता
की कामना करते हैं ।

--व्यवस्थापक

दयाल मानवता प्रचारकें सभा नई दिल्ली द्वारा आयोजित

वार्षिक सन्त सम्मेलन सन् १९७९

संसार में हर प्राणी भौतिक सुख के पश्चात आत्मिक सुख की तलाश में भटकता है अथवा संसारिक दुखों से पीड़ित होने पर किसी सहारे की तलाश करता है। और यह सुख केवल सन्तों के समागम से प्राप्त होता है। समय-समय पर हर युग में अनेक रूपों में प्राणी को शाँति देने के लिये सन्तों का अवतार होता रहता है। आज के युग में आशा के दीप, दुखियों कौ शरण देने वाले तथा सबके कल्याणार्थ एक महापुरुष का अवतार हुआ है जो निस्वार्थ, पाखण्ड रहित तथा सभी को सीने से लगाने में समर्थ परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज हैं।

९३ वर्ष की आयु में आपका तेज अद्भुत है। वाणी में मधुरता तथा अन्तःकरण में सभी के लिये प्रेम है। वह एक समुदाय के सन्त न होकर जन-जन के लिये हैं।

दशहरे के पुनीत अवसर पर आपने दिनांक ३०-९-७९ तथा १-१०-७९ को तीन सतसंग कराये। अपने प्रवचनों में उपस्थित जन समुदाय को केवल एक ही बात पर अनेक दृष्टान्त देकर बताया कि लोग मेरा ध्यान करते हैं और उस शक्ति से अपना काम बना लेते हैं। लेकिन उसका मुझको कोई ज्ञान नहीं है। मैं किसी के ध्यान या स्वप्न में नहीं जाता लोगों का अपना ही विश्वास उनकी मदद करता है। इस रहस्य को किसी भी सन्त ने अपने अनुयाइयों को नहीं बताया और उनको भ्रम में रखकर अपना मठ व अपनी जागीर बनाने में लगे हुए हैं। सन्त मत की ऊँची-२ दूकान खोल रखी हैं जिसमें अज्ञानिथों को सच्ची बात न कहकर केवल अपनी पूजा कराने का मार्ग बताते हैं।

आपने स्थिति को स्पष्ट करते हुये कहा कि लोगों को गुमराह करके जो भी सन्त महात्मा धन इकट्ठा करते हैं उससे सम्भव है कि अनुयायी तो तर जाय अपने भाव व श्रद्धा के आधार पर, मगर उन सन्तों का अन्त क्या होगा

यह नहीं कहा जा सकता। मैंने अपने जीवन में अपने निजी स्वार्थ या आवश्यकता के लिये किसी का एक पैसा भी नहीं लिया यही कारण है कि मैं सुखी हूं और अन्तःकरण से सभी का भला चाहता रहता हूं। वह सन्त अपूर्ण है जिसके समागम से शाँति नहीं मिले। मैं दावा नहीं करता कि जो मैं कहता हूँ वह ठीक ही हो मगर मेरा यह निजी अनुभव है। यह संसार लेन देन का है। किसी को प्यार दोगे प्यार मिलेगा, घृणा दोगे घृणा मिलेगी, पैसा दोगे पैसा मिलेगा, जैसा बोओगे वैसा काटोगे। जैसी इच्छा शक्ति होगी वैसी बरकत होगी।

माताओं व बहिनों को उपदेश देते हुए कहा कि अच्छी सन्तान पैदा करो अपने माँ–बाप, सास स्वसुर की सेवा करो यही तुम्हारी साधना है यही पूजा है यही धर्म है।

देश में फैली अराजकता के विषय में अपने विचार प्रकट करते हुये महाराल फरमाते हैं कि मौजूदा राजनीति ने देश में घृणा का प्रचार कर रखा इससे न तो देश का कल्याण होने वाला है और न समाज में शान्ति होने वाली है। रोज रोज की हड़तालें, तालाबन्दी, घेराव तथा अनुशासन से देश कमजोर हो रहा है। और इसके कारण मानसिक तनाव की स्थिति पैदा हो रही है जो देश को पतन की ओर ले जा रही है। वर्तमान चुनाव प्रणाली के कारण नफरत व घृणा का वातावरण उत्पन्न हो रहा है। जिससे देश का भविष्य अन्धकार मय हो रहा है।

'कर्म की ओर सभी का ध्यान दिलाते हुये आपने फरमाया कि सच्ची नेक नीयती से अपते जीवन में कर्म करो केवल अपनी ही मेहनत से कमाये धन से अपना पालन पौषण करो यही तुमको सुख व शान्ती देगा। किसी को दगा देकर कमाया धन कभी फलीभूत हो ही नहीं सकता।

इस अवसर पर हरियाणा से सन्त ताराचन्द जी, हैदराबाद से हजूर आनन्दराव जी, बम्बई से पं० पृथ्वीनाथ जी तथा दिल्ली से श्री नन्दलाल जी उर्फ आनन्द दयाल जी का भी प्रवचन हुआ।

सभी ने अपने प्रवचनों में अमली जिन्दगी बसर करने पर बल दिया तथा

ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किये।

खाने का इन्तजाम दिल्ली की सभा के द्वारा ही प्रबन्ध किया गया था तथा रहने के लिये सलवान स्कूल के प्रबन्धकों द्वारा किया गया जिसके लिये सभा के सभी सदस्य उनके आभारी है।

—०—

नव वर्ष की शुभ कामनाओं सहित मनुष्य बनो का ३० वाँ वर्ष में प्रवेश

प्रिय ग्राहक बन्धुओं,

मनुष्य बनो का ३० वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। आइये मिलकर इस पत्रिका के माध्यम से गुरू महाराज एवं महर्षि शिवब्रतलाल वर्मन जी महाराज के विचारों को ज्यादा से ज्यादा जनता में फैलाये जिसके आवश्यक है। कि कम से कम २-२, ४-४ नवीन ग्राहक प्रत्येक ग्राहक भाई और बनायें एवं चन्दा भी समय पे भिजवाते रह। गुरु के विचारों से ज्यादा से ज्यादा लोगों को अवगत कराना भी. गुरु सेवा कहलाती अतः सभी बहिन-भाई इस शुभ कार्य में हाथ बटायें। एवं नव बर्ष का स्वागत करें।

धन्यवाद

पिछले वर्ष जिन ग्राहक भाइयों ने इस पत्रिका के लिए समय समय पर दान भेजकर एवं ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोग दिया है। हम उन सभी बहिन भाइयों के आभारी हैं।

२५/- श्री मती सत्गुरु सरन देवी पुत्री श्री सुखदेव राम वैद्य आजमगढ़ से मनुष्य बनो की सहायतार्थ प्राप्त हुए हैं।

२५/- भूपति वीरइया सोम लिंगन, (आ०प्र०)

२०/- गुप्त दान

हम इन सभी ग्राहक भाइयों के आभारी हैं। एवम् सुख समृद्धि की कामना करते हैं।

व्यवस्थापक—सुधा मीतल

प्रवचन

हुजूर परमदयाल पंडित फकीरचन्दजी महाराज, मानवता मन्दिर, होशियारपुर दिनांक २०-११-७८

निज वैपारी नाम का हाटै चलु माई।
साध सन्त गहकी भये, गुरु हाट लगाई।
सार शब्द कुछ वस्तु है, सौदा करु भाई।
भाव खुला पंच रंग का, बहु करत दलाली।
जाके हाथ बिबेक है, करि देत सवाई।
पाप पुन्न पतरा भय, सूरज भई डाड़ी।
ज्ञान दूसरी डारि कै, पूरा करु आई।
करि सौदा घर को चले, रोका दरवानी।
लेखा दे निज नाम का, कहं का बैपारी।
पानी सी बानी वही, गुरु छाप दिखाई।
इतना सुन कायल भये, जन सीस नवाई।
सन्त चले सत लोक, छोड़ा संसारी।
कुन्दन भय दरबार में, प्रभु नजर गुजारी।
कहै कबीर बढ़ो सही, सिख नेहु हमारी।
काल कलप व्यापै नहीं, इहै नफा तुम्हारी।

राधास्वामी। मैं अपने आपसे पूछता हूँ तू यह काम क्यों करता है? दोस्तो! सात वर्ष की आयु से यह विचार पैदा हुआ था कि मैं राम को मिलूं या याद कर, जैसा कि हिन्दू धर्म में कहा गया है कि नाम जपो। मैंने राम राम करके बहुत मालायें फेरीं और विष्णु सहस्र नाम के पाठ किये लेकिन मेरे जीवन का अनुभव बदलता रहा आखिर एक घटना मेरे सामने आई। मैं राम और कृष्ण का ध्यान किया करता था। मेरे अपने विचार के साथ कृष्ण आगे चला करता था और मैं पीछे चला करता था। मैंने कई बार बांसरी की आवाज

भी सुनी। मैं वागाँ वाले स्टेशन पर ए–एस–एम था। मैं वहाँ बाहर से स्टेशन पर आया तो मेरे आगे आगे कृष्ण चलता था और पीछे पीछे मैं था। वहां गाय का गोवर पड़ा हुआ था। कृष्ण जी ने कहा कि गोवर खाले। मैंने गोवर उठाया और खा लिया। जब स्टेशन पर आया तो सोचा कि कहीं भागवत या भक्त माल में किसी धर्म वाले ने यह नहीं लिखा कि किसी इष्ट ने कहा हो कि तू गोवर खाले। मैंने कहा यह जो कृष्ण मेरे आगे फिरता है यह कृष्ण नहीं है। यह विचार है। फिर क्योंकि हिन्दू था, ब्रह्मण के घर पैदा हुआ था, मुझे रामायण से विचार मिला था—

नाना भाँति राम अवतारा, रामायण सच कोट अपारा।

फिर मैं पुकार करने लगा और रोने लगा। मैं चौबीस घण्टे लगातार रोता रहा। डाक्टरों को बुलाया गया। उन्होंने समझा कि कि यह पागल होगया है। रात को एक प्रातः पाँच बजे का दृश्य था जिसमें हुजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज प्रकट हुए। उन्होंने यह नाम दिया, अपना पता बताया और कुए से पानी निकाल कर मुझे नहलाया। इतने में उस स्वप्न में मेरा बाप आगया उसने मेरी शिकायत की तो मैं रोने लगा। जो काँटे-वाला ड्यूटी पर था उसने मुझे जगा दिया। फिर मैं दातादयाल के पास चला गया। उनको राम समझ कर पूजने लगा उन्होंने मेरी सुरत को गुरुमत और नाम की ओर लगाया हम राम की महिमा रामायण में भी सुना करते थे—

कली केवल इक नाम अधारा, वेद शास्त्र श्रुति मत सारा।

दाता ने उस समय नाम दिया और कहा कि अगर तुम असली राम को मिलना चाहते हो तो सन्तों के मार्ग पर चलो जैसा कि नानक साहिब, दादू, पलटू, राधास्वामी और कबीर साहिब के मार्ग पर चलो। जब इनकी वाणियाँ पढ़ीं तो इनमें सब का खण्डन था, कबीर साहिब, स्वामी जी या इन सन्तों ने किसी को नहीं छोड़ा,

राम, कृष्ण काल के अवतार, वेदान्त, सूफीवाद कालमत में तो हृदय घबराता था। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा और जो कुछ मुझे मिलेगा वह मैं बता जाऊँगा। मैंने १९०५ में नाम लिया और १९१६ तक सिवाय रोने और प्रार्थना करने के कुछ न बना। उस समय तो मुझे पता नहीं था, लेकिन अब पता लगता है कि इतनी देर क्यों लगी। क्योंकि मेरा विवाह तेरह: साल की आयु में होगया था और सोलह साल की आयु में मैं ग्रहस्थ में फँस गया था। अब मैं समझता हूँ कि जो मेरा छोटी आयु का विवाह था उसके कारण मैं अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को न पकड़ सका।

मैं १९१६ में बसरे बगदाद में लड़ाई में चला गया और बारह साल वहाँ रहा। मैं बन्दा अकेला था और भक्ति मार्ग का पैरोकार था। मैंने बड़ी-बड़ी रोशनियाँ देखीं, यहाँ तक कि अगर रात को रजाई लेलेता तो रजाई में से रोशनी में मकान की कड़ियाँ गिना सकता था। मैंने बहुत बीनें और शब्द सुने। यह पुरुषोत्तमदास बैठा हुआ है। यह मदरास में स्टेशन मास्टर था और मैं तार इन्सपैक्टर था मैं जब दौरे पर गया तो इसके स्टेशन पर उतरा। मुझे याद है कि वहां मुझे सारा आसमान ही बीन से भरा हुआ सुनाई पड़ता था। मैं वहाँ से बारह साल के बाद वापिस आया। दाता ने कहा सन्तान पैदा करो क्योंकि मेरे सन्तान नहीं थी। अगर तो मैं स्त्री के पास केवल सन्तान पैदा करने के लिये जाता तो और बात थी, मैं तो स्वाद में फँस गया। मैं स्टेशन मास्टर था, जब कभी Staff गलती करता या खाता था तो मुझे क्रोध आता था। यद्यपि मैंने अनुचित ढंग से पैसा नहीं कमाया मगर मेरे दिल में यह इच्छा रहती थी कि मेरी उन्नति हो जाये तो मैं दाता दयाल को शिकायत किया करता था कि आपने मुझे फकीर तो बना दिया मगर मुझमें ये अवगुण हैं। सोचा कि भई ! बीन सुनने और रोशनी देखने के

वाद भी ये अवगुण मुझ से नहीं गये यद्यपि सन्तों ने नाम का कितना ढिढोरा पिटवाया हुआ है। तुम नाम लेलो और बीन सुनलो तुम सतलोक पहुंच जाओगे। मैं सोचा करता था कि बीन सुनने के बाद मैं कामी हुआ यद्यपि बाहर नहीं गया, क्रोध और लोभ भी आया यद्यपि अनुचित नहीं था तो फिर बाबा क्या हुआ ?

मुझे उस असली और सच्चे नाम की समझ आप सत्संगियों ने दी ! इसलिए मैं इस आयु में उन्हें अपना सच्चा सतगुरु मानता हूँ जो आदमी मुझे गुरु मानते हैं और मेरा ध्यान करते है। आप पूछोगे क्यों ? लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है जो मेरा ध्यान करते हैं। किसी को दवाई बता जाता है, जिनको सन्तान की इच्छा है उनको सन्तान दे जाता है, स्कूल के पर्चे करवाने वाले कहते हैं बाबा ! तू आगया और Desk के नीचे बैठ गया और विज्ञान का पर्चा dictate करा दिया। हमें ९८/१०० नम्बर आये। किसी को डूबते हुए को बचा जाता है लेकिन मैं नहीं होता, नहीं मैं कहीं जाता हूँ और न ही मुझे पता होता है तो फिर विचार आया कि वह नाम क्या है ? मुझे तो पता ही नहीं होता तो यह विश्वास होगया कि जो किसी को मिलता है वह उसका अपना ही विश्वास श्रद्धा काम करती है मेरा तो एक सहारा है। मैं तो कुछ नहीं करता। अगर मैं करता होता तो मुझे पता होता। वह उनका अपना ही मन था। आज आपको कबीर साहिब की जबानी सुनाता हूं कि नाम क्या है और उसका अधिकारी कौन है ? संसार अन्धेरे में चलता है क्या उनका कोई दोष नहीं क्योंकि उन्हें कोई सच्ची बात नहीं बताता। अगर सच्ची बात बता दी जाय तो दायरा नहीं बनता, सत्संग नहीं होता और न धन आता है। मैं अपने कर्मभोग वश जो कुछ जीवन में अनुभव किया और समझा है कबीर साहिब के शब्द पर मोहर लगाता हूँ क्योंकि उनकी जबानी सत प्रतीत होता है जिससे मुझे उत्साह हो गया है कि मैंने जो कुछ नाम के बारे Realize किया

है वह ठीक है—

निज वैपारी नाम का, हाटै चलु भाई।
साध सन्त गह की भये, गुरु हाट लगाई।
सार सबद कछु वस्तु है, सौदा करु भाई।

आज कल नाम की महिमा है। सब धर्म पंथ नाम देते हैं आज कल कलियुग में नाम का जोर है। सब नाम ही नाम पुकारते हैं। मुझे कई पत्र आते हैं कि नाम दे दो जी। मैं किसी को क्या नाम दूँ। जब मैं बीन सुनने और इतना प्रकाश देखने के बाद फिर भी कामी हुआ, अपने स्वाद के लिए स्त्री के पास गया, कर्मचारियों पर क्रोध आया और अनुभव ढंग से धन नहीं कमाया मगर यह इच्छा अवश्य रही कि मेरी आमदनी अधिक हो जाये तो फिर नाम क्या हुआ ? केवल बीन सुन लेना नाम नहीं है। अगर मैं गलत हूँ तो वर्तमान सन्तमत वाले महात्माओं व अन्य धर्म पंथ वालो कोई भी धर्म हो, उनको मैं अधिकार देता हूं कि वे मेरा खण्डन करें शर्त यह कि उनकी जमीरें साफ हैं और वे अपनी रहनी के ऊपर चलें। हम लोग गुरु बन जाते हैं। क्या हम अपना कच्चा चिट्ठा किसी को बताते हैं कि हमारे मन के अन्तर क्या कुछ होता है ? कोई नहीं बताता हूं। कबीर साहिब जो कुछ कहते हैं वह सोलह: आने ठीक ठीक कहते हैं। वह कहते हैं कि सतगुरु, असली नाम, सार शब्द केवल सन्तों और साधुओं को देता है। मैं संसार और भारतवर्ष में नामधारियों को आवाज दिये जाता हूं कि महात्माओं ! गुरुओ !! तुम नाम जपते हो और गुरु बने हुए हो, अपने मन की दशा को watch करो कि तुम्हारे मन की दशा क्या रहती है। लोगों को भाषण देना आसान काम है। यह हर एक आदमी दे सकता है। यह वाणी मेरे अनुभव को सिद्ध करती है कि असली और सच्चे नाम के अधिकारी केवल साधू और सन्त हैं। साधू कौन है ? जो अपने मन पर कन्टोल कर सकता है. जिसके मन में शक्ति है और

जो अपने मन के अन्तर गुरु, देवी या किसी का रूप बनाकर ध्यान करता है, वह साधू है और सन्त वह है जिसके अन्तर प्रकाश पैदा होता है। मैंने बहुत प्रकाश देखे और शब्द सुने हैं। प्रकाश देखने और शब्द सुनने वाले को सन्त कहते हैं। त्रिकुटि में रहने वाले को साधू और भँवर गुफा या सतलोक में रहने वाले को सन्त कहते हैं। मैंने अपनी दशा आपको बताई है। कोई महात्मा अपनी रहनी नहीं बताता और अगर बता भी दे तो संसार उसका अधिकारी नहीं है। मेरे सत्संग से केवल अच्छे समझदार लाभ उठा सकते हैं सर्व साधारण नहीं उठा सकते। मेरा वचन ही नाम दान है।

असली नाम वह है जिससे हमारे अन्दर के सब अवगुण निकल हम अपनी जात में वासल (मिल) मिल सकते हैं। वह जो समझ और ज्ञान है उसका नाम सार शब्द सार नाम या असली नाम है। उसका अधिकारी केवल साधू और सन्त हो सकता है। साधू और सन्त को सतगुरु, मिलना चाहिए तब वह नाम जपा जायेगा शर्त यह कि वह उसका अधिकारी है। मुझे वह सार शब्द, नाम तुम सत्संगियों से मिला। दाता दयाल की दया है। जब उन्होंने देखा कि यह इतना मूर्ख है कि इसकी समझ में बात नहीं आती तो उन्होंने १९१८ में मुझे यह काम दिया था और कहा था कि तुझमें निन्यानवें अवगुण हो सकते हैं लेकिन एक सचाई प्रिय है। तुझे सच्चा सतगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा और तेरा बेड़ा पार करेगा। इसलिये मैं इस पिछली आयु में आप लोगों का उपकार मानता हूँ जिन्होंने मुझे असली और सच्चे नाम का पता दिया। दाता दयाल तो हैं नहीं कैसे पता लगा? जब मैंने सुना कि मेरा रूप उनकी अर्थात आप लोगों की सहायता करता है और मैं नहीं होता तो मुझे पता लग गया कि मेरे अन्तर जो कुछ भी प्रकट होता था रोशनी, शब्द, गुरु का रूप, देवी देवता और विचार ये वास्तव में नहीं हैं लेकिन Suggestion & Impressions हैं जो हमारे मस्तिष्क पर पड़े

हुये होते हैं। वे फुरते और शकलें बनाते हैं। जो असली नाम है जिससे कि इंसान का आवागमन समाप्त होता है, वह अपने घर चला जाता है और अपने खानदान में मिल जाता है जहाँ से वह आया है, वह केवल साधु और संत को मिल सकता है दूसरे को नही मिल सकता। इस कारण मैंने अपने आश्रम का नाम मानवता मन्दिर या Be man temple रखा है। क्यों कि जब तक इंसान का सदाचार (आचरण) और आदतें ठीक नहीं हैं, वह जीना नहीं जानता और उसका मन उसके वश में नहीं है उसे असली और सच्चा नाम मिल ही नहीं सकता, क्यों कि मेरे जिम्मे कर्तव्य था—

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर लेजा गुरु, के देशा॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल, अवल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई नामदान दे दानी॥

इसलिए मैं जो मुँह से कहता हूँ यही मेरा नामदान है। मैं लोगों को मकान के अन्दर बैठाकर नाम नहीं उपवाता मगर मैं इसका खण्डन भी नहीं, करता, क्योंकि जो हैं उनके लिए ऐसा चाहिए। मैं ऊँचा चला गया। मैं अलफ, वे, पे नहीं पढ़ा सकता। अब यह मेरी शक्ति में नहीं रहा हैं जिस प्रकार बड़े-बड़े प्रोफेसर P. H. D, B. A. M. A पढाते हैं इस समय मेरी नयी Stag है। इसलिए सर्व साधारण को मुझसे जीने के सिवाये नाम का लाभ नहीं पहुँच सकता—

निज वैपारी नाम क –हाटै चलु भाई।
साध संत गहकी भये–गुरु हाट लगाई।
सार शब्द कुछ वस्तु है, सौदा कर भाई।

कबीर साहिब ने बहुत जगह सार शब्द में सारनाम का वर्णन किया है। अब मुझे क्या हो गया? जो में घंटा, शंख, ओं की धुन, रारंग सारंग या बीन सुनता था वह क्या निकला? वह सार शब्द नहीं है। अगर वह सार शब्द होता तो मैं घर में आकर कामी कैसे होता, मुझे क्रोध क्यों आता, में यह इच्छा क्यों करता कि मेरी उन्नति हो जाये यद्यपि मैंने अनुचित ढंग से

धन नहीं कमाया यह एक प्रश्न है जो में अपनी आत्मा से करता हूँ न मुझे उस सार शब्द का पता तुम लोगों ने दिया। कैसे ? जबसे मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्दर जाता है लेकिन में नहीं होता तो मुझे सिद्ध हो गया है कि जो कुछ भी मेरे अन्तर फुरता है चाहे वह दाता दयाल, राम या कृष्ण या और कुछ है, वह माया अर्थात बुद्धि का काम है। जहाँ नाम है वहाँ न माया और न ब्रह्म है। ब्रह्म क्या है ? ब्रह का अर्थ बढ़ना और म का अर्थ सोचना है संसार में वह कौन सी चीज है ? रोशनी हर जगह फैली हुई है। हर एक चीज में रोशनी है और रोशनी ही ब्रह्म है जब मुझे यह ज्ञान हुआ तब सार शब्द का पता लगा यह सार शब्द क्या है ? अब जब में अभ्यास करता हूँ तो मन के सारे विचार छोड़ जाता हूँ। मेरे सामने कोई रूप नहीं आता। केवल प्रकाश और शब्द होता है। प्रकाश को देखने और शब्द को सुनने वाली कोई और चीज है प्रकाश और है और शब्द और है। मैं उस चीज की तलाश करता हूँ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है जब कभी दूसरे तीसरे या चौथे महीने या दूसरे दिन उसकी तलाश में जाता हूँ तो फिर मुझे क्या होता है ? मुझे सार शब्द मिल जाता है। सार शब्द क्या हुआ ? जहाँ न मैं, न तू, न गुरु, और न चेला है। यही संतों की अपनी (Research) का परिणाम है। जहाँ स्वामी जी चेत महीने में सारे दर्जे बताते हैं वहाँ आखिर में क्या कहते हैं ?

नहीं वहाँ सतनाम न नाम न अनामी

अगर हम सदा के लिए अपने मालिक में उसका रूप होना चाहते हैं तो हमें कहाँ जाना पड़ेगा ? जहाँ न सत है, न नाम है, और न अनाभी है। मैं समझता हूं कि मैं बहुत ऊँचा सत्संग दे रहा हूँ। और मैं जानबूझकर देरहा हूं किस लिए क्यों कि इस समय हम ग्रहस्थियों को नाम की आढ़ में मूर्ख बना कर लूटा जा रहा है। अगर किसी का रूप किसी के अन्दर प्रकट हो गया तो उसने समझ लिया कि बाबा फकीर आया, उसे कोई बात कहदी और दवाई बतादी वह आया धन दे गया और मेरी सेवा करदी। यह बिल्कुल झूँठ है। यही एक हरदा है जिसके अन्दर मानव जाति हजारों भिन्न-भिन्न पथों, धर्मों

में बट गई और हमारे सिर फटे। पाकिस्तान में क्या हुआ ? अब भी देश में धर्म के नाम पर झगड़े हो रहे हैं। ऐसा क्यों होता है ? क्यों कि लोगों ने गुरु के रूप को नहीं समझा। गुरुमत का अभाव है और जो गुरुमत है भी, यह गुरुमत नही हैं यह कालमत है। मैं इसमें इतना दोष गुरुओं का नहीं गिनता (समझता) जितना संसार वालों का है। आप लोग संसार के पीछे फिरते हैं। किसी को कुछ चाहिए और किसी को कुछ। हमें तुम्हें जो मिलता है यह हमारे कर्मों का फल है। जो गुरु, दो दो, तीन तीन, साल स्वयं बीमार हो जाता है तुम उससे यह आशा करते हो कि वह तुम्हें स्वस्थ कर देगा, यह कैसे हो सकता है।

सर्वसाधारण के लिए नाम नहीं है। इसलिए मैं किसी को नाम नहीं देता। सर्व साधारण के लिए पहले मन पर कन्ट्रोल चाहिए। जब तक मन पर कन्ट्रोल नहीं है तुम लाख कोशिश करो तुम नाम नहीं जप सकते।

जहाँ काम तहाँ नाम नहीं जहाँ नाम नहीं काम
रवि रजनी दोनों न मिलें एक ठोर एक याम

अब आप पचास पचास, साठ साठ साल के हो गये हैं। आपके नौजवान लड़के हैं फिर भी हम विषय विकार नहीं छोड़ते और आशा करते हैं कि हमें नाम और शान्ति मिल जाये और हम अपने घर चले जायें, यह नहीं हो सकता वहाँ तो वह जाता है जिसे यह ज्ञान हो कि मेरे अन्तर जो कुछ फुरना फुरती है यह नहीं है। यह केवल माया और कल्पित है। मुझे जब यह विश्वास हुआ तो अब मैं क्या करता हूँ ? अब मैं प्रकाश और शब्द में जाता हूँ। वहाँ यह कोशिश करता हूँ कि उस चीज की ओर जाऊँ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह चीज मालिक का अंश है। उसका नाम सुरत है। जो उसमें से पैदा होती है वह नाम है। असली और सच्चा नाम उसके साथ मिलाता है उसके साथ वह सार शब्द है। वह न

आयेगा ? जब तक इन्सान को यह विश्वास नहीं हो जाता कि जो कुछ मेरे अन्तर फुरता है यह माया और कल्पित है। यह बिल्कुल साफ और सच्ची बात है। तभी तो कहा है—

नानक कोटन में कोउ, नारायण जिन चीन।

ऐसा कोई कोई आदमी होता है। सर्व साधरण के लिए मानवता की शिक्षा है कि पहले मानव बनो। जीवन के मार्ग आश्रम हैं। बच्चा पैदा होता है, फिर जवान होता है। आप लोगों ने कहा हुआ है कि पचीस साल से पहले विवाह मत कराओ। भई क्यों ? खून की चालीस बूदों से एक बूँद ओजस की बनती है और ओजस की चालीस बूदों से एक बूँद वीर्य की बनती है। जिन आदमियों और लड़कों का वीर्य छोटी आयु में गलत कर्मों से नष्ट हो जाता है उनके भाग्य में अशान्ति और रोना अनिवार्य है। उन्हें डाक्टर या मेरे जैसे महात्मा लूटेंगे। मन की चंचलताई क्यों अधिक होती है ? मन के चंचल होने के तीन चार कारण हैं। पहला कारण स्वास्थ्य का ठीक न होना है अर्थात Ill health होना। स्वास्थ्य के न ठीक होने के और भी कारण हैं मगर सब से अधिक कारण विषय विकार है जिससे जबानी (युवावस्था) में कोई न कोई रोग होना जरूरी है। दूसरा कारण आर्थिक कठिनाई अर्थात पैसे की कमी, तीसरा कारण किसी का अनुचित रोब (दबाओ), और चौथा कारण अज्ञान है। हमारी अशान्ति के यह चार कारण हैं। इसलिए मैं कहता हूं कि अपने अपने बच्चों के चरित्र Character का पूर्ण ध्यान रखो। यह माँ बाप का कर्तव्य है। मैंने अपने लड़के को नाम नहीं दिया लेकिन उसके चरित्र को बनाया। इस समय वह बड़ा भारा अफसर है। मैंने उसे कभी नहीं कहा कि तू बैठ कर राधास्वामी जपा कर। पहले मानव बनो। प्रारम्भ में सबसे आवश्यक बात क्या है ? कि मानव अपने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन करे, यह नहीं कि विवाह ही न कराये। यह मेरा भाव नहीं है। मेरे दुखों का

क्या कारण था ? छोटी आयु का विवाह। मेरा बाप बड़ा कठोर हृदय वाला था। मैं जरा भर भी गलती खाता था तो वह तुरन्त थप्पड़ मारते थे। मैं हर समय सहमा हुआ रहता था। इन्हीं कारणों से मैं ईश्वर की ओर आया और वह शून्य था—

दुख द्वार सुरत रोग भया

मुझे वे दुख थे इसलिये मैं इस ओर आया और मेरा जीवन वन गया। मैं क्या कहना चाहता हूं ? कि असली नाम सब के लिए नहीं है जब तक मानव पहले मानव न बने। तुम्हारे अन्तर जो कुछ अभ्यास में आता है वह बताता हूं :-

भाव खुला पंच रंग का, बहु करत दलाली।
जा के हाथ विवेक है, करि देत सवाई।

वह कहते हैं कि जो आप अपने अन्तर अभ्यास में शकलें, रंग, यह और वह देखते हैं, ये सब क्या करते हैं ? जिनका यह खुल जाता है वे दलाली का काम करते हैं। दलाल कौन होता है ? जो लेने और देने वालों को आपस में मिला देता है। दलाल का यही काम है और तो कुछ नहीं जो आदमी अपने अन्तर साधन अभ्यास करता है रंग रूप गुरु की शक्ल या मृदंग सुनता है, उससे क्या लाभ होता है ? वह दलाली का काम करता है। वे Self को उस बड़े Self से मिला देते हैं जो दलाली करते हैं। मगर वे दलाली कब करेंगे ? जब वे समझ बूझ कर और विवेक समझ से अभ्यास करते हों तब इस वास्ते गुरु धारण किया जाता है। गुरु धारण करने का भाव यह नहीं है कि तुम गुरु को सिर पर बैठालो। तुम भूल में हो। गुरु धारण करने का भाव यह है कि गुरु के सत्संग में जाकर उसकी बात को सुनो समझो और उस पर अमल करो। इसका नाम विवेक है और यही सुखमणी साहिब में लिखा है—

सतपुरुष जिन विवेक किया, सतगुरु तिस का नाम।
ताके संग शिष्य उभरे नानक हरी गुण गान॥

उसकी सेवा करो। आखिर वह कहते हैं कि सतपुरुष क्या है ? संसारवालों ने सतपुरुष को नहीं समझा। वे शब्दों के जाल में फँसे हुए हैं। सुखमनी साहिब ने साफ लिखा है—

जिव्हा एक अस्तुती अनेक, सतपुरुष है पूर्ण विवेक

विवेक कब मिलेगा ? जब तुम किसी संत या किसी महापुरुष के सत्संग में जाओगे और उसकी सेवा करोगे। संसार वालों ने यह समझा हुआ है कि सेवा केवल रुपया देना है। अगर रुपया देने से कोई सतलोक पहुंच सकता तो ये बड़े बड़े धनी लोग रुपया देकर वहाँ पहुंच जाते। ये रुपया देने का काम नहीं है और न किसी भी प्रकार की संसारी high qualification का काम है यह बिल्कुल गलत है यहाँ गुरु की सेवा करनी पड़ती है। आप लोगों ने गुरु की सेवा को नहीं समझा है। आपने यही समझा हुआ है कि बाबा फकीर आया, इसे पाच छः सब्जिएं बनाकर खाना खिला दिया, कपड़े, तुमने पहना दिये, पैसे दे दिये। यह गलत है। जो कुछ तुम देगे वह मिलेगा यह संसार का व्यवहार है। इससे परमार्थ का कोई सम्बन्ध नहीं। तथा मेरे मन्दिर के चार कमरे बनाने या किसी दूसरी जगह का डेरा, मकान या महल बना देने से तुम सतलोक पहुँच जाओगे ? बिल्कल गलत है। गुरु की असली सेवा है :—

दर्शन करे वचन पुनि सुने, सुन सुन कर नित मन में गुने
गुण गुण काढ़ ले तिस सारा, कढ़ सार तिस करे अहारा
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग मन भय सब गई गंवाई

यह बाहर का देना केवल प्रमाण है कि आदमी को उस चीज आवश्यकता है। तब वह सत्संग में जाता है। जब वह सत्संग में जाता है तो खाली हाथ नहीं जाना चाहिए यह आज्ञा, दस्तूर है कि पीरों वाले घर, महापुरुष, अफसर के पास खाली हाथ नही जाना चाहिए। जो खाली हाथ जाते हैं वे खाली हाथ आते हैं। हमारी भारत देखो, आर्य लोग जंगल में रहते थे। जब वह राजाओं के

पास जाते थे तो यज्ञ करने की समधा ले जाते थे। बच्चों के पास कभी खाली हाथ मत जाओ तब वे तुम्हारी ओर ध्यान देंगे। यदि सच्चे संत के दर्शन करने हों तो छः महीने या एक साल के बच्चे के दर्शन करो। जो उस बच्चे के मन की दशा होती है वही एक सच्चे संत की होनी चाहिए। उसे न किसी से रागद्वेष है, न विरोध है और न वह खुदा राम या कृष्ण को याद करता है। अब में किसी को याद नहीं करता। में अब नाम नहीं जपता लेकिन नाम मुझे जपता है—

माला फेरू न हर भजूं, मुख कहें न राम ।
मेरा राम मुझे जंपे तब पाँऊ विश्राम ॥

नाम तो मैं पहले भी जपता था मगर भ्रम में था। मुझे यह पता नहीं था कि राम हर समय मुझे जपता है। राम मुझे कैसे जपता है ? राम प्रकाश और शब्द है। वह तो हर समय मेरे अन्तर था। जब तक में जीवित हूँ तब तक मेरे अन्तर रहेगा। वह तो हर समय मुझे जपता था और मेरे साथ रहता था मगर मुझे पता नहीं था। यह पता बाहर का गुरु देता है। इसलिए मेंने अपने आपको Publically प्रकट किया है कि मैं समय का संत सत्गुरु हूँ। ऐसा कहने से मुझ में कोई विशेषता आ गई, कोई दुर्ग और सींग नहीं लग गये। सत्गुरु नाम सच्चे ज्ञान का है। मैं आप लोगों को सच्ची बात कहता हूँ—

भाव खुला पंच रंग का -- बहु करत दलाली
जाके हाथ विवेक है—करि देत सवाई ।

पचरंगी फुलवाड़ी, अर्थात सहस-दल कंवल, त्रिकुटि सुन्न महा-सुन्न और भंवर गुफा क्या है ? जिस प्रकार का तुम्हारा मन है उसी प्रकार के रूप तुम्हें अन्तर दिख ई देंगे तुम्हें जैसे संस्कार पड़े हुए हैं और जैसे तुम्हारे विचार हैं वैसे तुम्हारे अन्तर पैदा होंगे।

समझ बूझ के साथ अभ्यास करो। लेकिन हम वाणियों को पढ

कर अभ्यास करते हैं। तुम्हारे अन्तर जिस जिस प्रकार की प्रकृति है जिन जिन सितारों तुम्हारा मस्तिष्क बना है शनि, राहु, सूर्य और चन्द्रमा जिस जिस स्थान पर पड़े हैं उसके अनुसार तुम्हारे अन्तर विचार पैदा होंगे। उससे अलग नहीं हो सकते। जिन ग्रहों में मानव पैदा हुआ है। जिसको सूर्य बुद्ध या वृहस्पति नवे या पाँचवें घर में हैं और लगन में हैं वे अपने अन्तर प्रकाश देख सकते हैं। जिन्हें ऐसी मति नहीं आई हुई है वे कभी नहीं देख सकते। क्यों ? क्योंकि उनका समय नहीं है। यह चीज हर एक आदमी के भाग में नहीं आती मगर सब अन्तिम अवस्था पर पहुंच सकते है। आप मेरे भाव को समझ गये होंगे। जिस जिस प्रकार के तुम्हारे भाव और विचार हैं। जो तुमने किताबों से पढे हैं या तुम्हारे माँ बाप के संस्कार है, वे आयेंगे।

मैं स्त्रियों को साफ कहना चाहता हूँ कि तुम ही अपनी सन्तान को बनाने वाली हो दूसरा कोई नहीं। माँ के जिस प्रकार के विचार होंगे वे बच्चे पर जायेंगे जब वह पेट में होगा जैसे मैं अभिमन्यु का उदाहरण दिया करता हूँ। जब अभिमन्यु अपनी माँ अर्थात अर्जुन की स्त्री के पेट में था तो अर्जुन अपनी स्त्री को चक्रव्यूह बीधने का वर्णन बता रहा था। उस समय तक तो वह जागती रही लेकिन जब उसने इससे निकलने का वर्णन किया तो वह सो गई। अभिमन्यु ने चक्कर व्यूह बीधना सीख लिया।

मैं आप लोगों को कुछ कहना चाहता हूं। मेरे सत्संग में मातायें लड़कियां आती हैं। मुझसे कुछ ले जाओ। गंगा बह रही है अगर नहाना धोना हो तो कम से कम ठन्ड़ी हवा (वायु) ही ले जाओ। जिस प्रकार के संस्कार तुम्हारे मन के अन्तर होते हैं वे बच्चा ग्रहण करता है। एक उदाहरण मैंने अभिमन्यु का दिया दूसरा अकबर का देता हूँ हुमायूँ शत्रु से डरा हुआ भागकर जंगल में छुपा हुआ था। अकबर उसकी माँ के पेट में था। जब बेगम जंगल मैं अकेली बैठो

हुई थी तो अपने पाँव से जमीन पर नक्शा (चित्र) बना रही थी। उधम से हुमायूँ निकला और पूछने लगा कि बेगम तू क्या करती है उसने कहा कि मेरे घर जो लड़का पैदा हो वह इतने (देश) का राजा हो। जितना कि मैं नक्शा खींच रही हूँ यह उसकी इच्छा थी।

मैं आपको अपना उदाहरण देता हूँ। मैं एक सिपाही का लड़का हूं मेरे पिता रेलवे पुलिस में कानस्टबिल थे। उनके घर बारह साल तक कोई सन्तान नहीं हुई। मैं पहला लड़का हूं। मेरी माँ मुझे कहा करती थी बच्चा ! मैं स्टेशनों पर स्टेशन मास्टरों को झंडिया हिलाते देखा करती थी। जब D.T.S की गाड़ी आतीं तो काट देते मेरी इच्छा थी कि मेरा भी कोई लड़का हो। वह स्टेशन मास्टर बने और उसकी गाड़ी भी कटे उसकी इच्छा का यह परिणाम निकला कि मैं स्टेशन मास्टर बन गया और मेरा छोटा भाई ट्रैफिक मैनेजर रेलवेज और गाड़ियों में घूमा ऊँची बात को तो आप समझ नहीं सकते हो, वह यह है कि अच्छी सन्तान पैदा करो, तुम मातायें Nation को बनाने वाली है। अगर ये लीडर बना सकते होते तो महात्मा गाँधी बना जाता। उनका स्वराज्य का स्वप्न कहाँ गया। क्या देश में स्वराज्य आया हुआ है ? यहाँ तो नर्क राज्य आया हुआ है। यहाँ कहाँ स्वराज्य है क्यों ? क्यों कि यह माताओं या हमारा दोष है। हम शराब पीकर काम के जज्बे में स्त्रियों के पास जाते हैं और बच्चे ठहर जाते हैं। उन स्त्रियों से तुम यह आशा करो कि वे देश के लिये लाभ पहुँचायेंगें, ऐसा नहीं हो सकता क्यों कि तुम out of control होकर स्त्रियों के पास जाते हो। आजकल देखते हो कि असम्बलियों में क्या हो रहा है। क्या किसी में कन्ट्रोल है ? एक दूसरे के विरुद्ध कीचड़ उछाल रहा है। ऐसा क्यों है ? क्यों कि यह माताओं का दोष है बच्चों का नहीं अगर अभिमन्यु माँ के पेट में चक्रव्यूह बीधना सीख सकता था और माँ के भावों के अनुसार मैं स्टेशन मास्टर और मेरा भाई ट्रैफिक मैनेजर हो सकता है तो

बाकी बच्चों पर माँ बाप का क्यों प्रभाव नहीं पड़ेगा ? अवश्य पड़ता है। जब चार महीने के बाद बच्चा मां के पेट में होता है तो स्त्री-पुरुष भोग करते रहते हैं। माँ कामातुर होती है तो तुम कैसे आशा कर सकते हो कि जो बच्चा पैदा होगा चाहे लड़की या लड़का हो वह समय से पहले कामी न होगा। वह कामी होगा, कोई रोक नहीं सकता। यह विज्ञान है।

अगर मैंने वही काम करना होता जो दूसरे महात्मा करते हैं तो मुझे नई दुकान खोलने की आवश्यकता नहीं थी। कोई सन्त महात्मा ऐसी शिक्षा नहीं देता। क्योंकि सच्ची बात बताने से कोई लाभ नहीं होता। मैंने सन्तान के विचार से केवल एक लड़का पैदा किया है वरना मैं भी आपकी तरह दोषी हूँ। मैंने खुद दो सन्तान पैदा की हैं मगर उस समय मुझे पता नहीं था। मालिक ने मुझ पर दया की कि मेरा (खुदरौ सन्तान) मर गई। अगर आज हमारी सन्तान है तो हम खराब है और हमारी गलती है सन्तान का कोई दोष नहीं तुम जिस प्रकार का बीज बोओगे वैसा फल पायेगा। अगर कनक (गेंहूँ) का दाना खराब है तो उसका पौधा भी वैसा ही पैदा होगा। ऐसे ही हमारे और माताओं के विचार बच्चे पर प्रभाव डालते हैं। जब बच्चा पेट में हो तो अच्छे विचार रखो। मैं स्त्रियों का गुरु, इसी वास्ते स्त्री बना रहा हूँ कि वे उन्हें समझा सकेंगी दूसरे, धन, कपड़े लेजायेंगी लेकिन सब तो नहीं लेजायेंगी। मैं इसके विरुद्ध हूँ कि स्त्रियें सन्तों महात्माओं के पाँव दबाती फिरें। यह गलत है। जैसे तुम हो और तुम्हारे विचार हैं वसे तुम्हारे बच्चे होंगे। जिस घर में कलहः कलेश है और मियां बीबी को नहीं बनती, वहाँ बच्चे तो पैदा हो जायेंगे मगर पति पत्नी के दिल एक न होने के कारण बच्चे मंगलीक पैदा होंगे।

स्त्री, पुरुष जिस प्रकार के विचार रखेंगे वैसे बच्चे पैदा होंगे मैं आपको समाचार पत्र की एक सच्ची बात बताता हूँ। एक अंग्रेज

के घर लड़का पैदा हुआ। वह हवशी की शकल का था। अंग्रेज नें अपनी स्त्री पर दावा कर दिया कि यह मेरा लड़का नहीं है, किसी और का है। स्त्री कहने लगी कि यह मेरे पती का लड़का है। उनका खून (रक्त) मिलाया गया। खून ठीक बाप के साथ मिल गया अब जज विपत्ति में पड़ गयो कि क्या निर्णय करे। जज समझदार था। वह उसके मकान पर गया। वह उस कमरे में चला गया जहाँ वह स्त्री रहती थी। उसने उस कमरे में हवसी की फोटो देखी जिसे वह स्त्री देखतो रहती थो। जब बच्चा पेट में था तो वह उस फोटो को देखती रहती थी। इसलिए उस लड़के की शकल हवसी जैसी होगई मैं वह शिक्षा देना चाहता हूं जिससे तुम लोगों के जीवन बदल जायें तुम्हारो भी सन्तान अच्छी पैदा हो। तुम्हारा दीन, धर्म इमान भी बने और तुम्हें मुक्ति भी मिल जाये।

आपने देखा होगा कि मेरा और मेरी लड़कियों का रंग गोरा है मगर पदम का रंग सांवला है। क्यों साँवला है ? आपको मैं भेद की बातें बताता हूं। मेरी स्त्री मासिक धर्म के बाद नहाई। जब नहा कर बाहर निकली तो उसने कालो को देखा जिसका रंग बिलकुल काला था। उसे मैंने अपने घर किसी काम के लिए भेजा था। वह मेरे पास कांटे वाला था। जब मैं शाम को घर गया तो मेरी स्त्री मेरे गले पड़ गई कि अपने काले कटोरे को भेज दिया। जब मैं नहाकर हटी तो वह सामने आगया। उसके संस्कार से उसके रंग में परिवर्तन आया। वहनो !! भाईयों !!! बुर्जुगो !!! मैं तुम्हें वे बातें बता रहा हूँ अगर तुम उन पर अमल करोगे तो तुम्हारा भला होगा। मैं आपको जीवन व्यतीत करने का मार्ग बतांता हूं। हम दुखी क्यों है ? कोई स्त्री कोई भाई और कोई लड़के से दुखी है। इसका जिम्मेवार कौन है ? अज्ञान। हमें किसी ने सचाई नहीं बताई। मुझे स्वय खेद है कि मेरे बाप ने कोई उपदेश नहीं दिया। हमने जो गलत काम सीखे वे अपने साथियों से सीखें। हमें उस

समय क्या पता था। अब तो मैं निर्लज्ज होगया हूं। मैं सबको कह देता हूँ कि माताये अपनी लड़कियों को सारी बात समझायें और बाप अपने लड़कों को समझायें। अगर वे न समझें तो उनके सिर की जिम्मेदारी तो समाप्त होगई। यहाँ नौजवान बैठे हैं तुम अपने आपसे पूछो कि तुम क्या करते हो? तुमने बचपन में कितनी गलतियां खाई हैं। जब बड़े हो जाते हो तो फिर डाक्टरों के पास दौड़ते फिरते हो। मेरी बात को बुरा न मानना—

साधू ऐसा चाहिए, सच्ची कहे बनाये

मैं इस बात की चिन्ता (परवाह) नहीं करता कि तुम अवश्य मेरे सत्संग में आओ। आपकी इच्छा सत्संग में आओ अगर न करे तो मत आओ। आपकी इच्छा करे तो मेरी कोई किताब पढ़ो अगर न करे तो मत पढ़ो। मेरे जिम्मे तो दाता दयाल ने कर्तव्य लगाया था कि शिक्षा को बदल जाना मैं सचाई के साथ बदल चला मगर यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूँ यहीं Final है। मेरे जैसे संसार में बहुत फकीर आये और अपनी अपनी बाणी कह कर चले गये। संसार तैसे का तैसा ही है। जिनके आश्रम में है वे बात को समझ कर अपना जनम बना लेते हैं जिनके भाग्य में नहीं वे न बनायें। मैं सच्ची बात कहता हूँ—

भाव खुला पचरंग, बहु करत दलाली।
जाके हाथ बिबेक है, करि देत सवाई।।

तुम लाख नाम जपते रहो, अगर तुम्हारे मन के विचार शुद्ध नहीं हैं तो वह नाम तुम्हें खाजायेगा। तुम नाम जपते और सुमिरन ध्यान करते हो। उससे क्या होता है? तुम्हारी will Power बढ़ जाती है। मुझे यह अनुभव हुआ है। जिनका ध्यान बन जाता है उनके काम हो जाते हैं और उसका Credit his holiness Pt. Faqir Chand ji Maharaj को मिलता है यद्यपि फकीरचन्द ने कुछ नहीं किया। तुम्हें जो कुछ मिलना है तुम्हारे बिचार की शक्ति

से मिलता है। किसी बाहर के गुरू या राम ने आकर तुम्हारी सहायता नहीं करनी है। तुम भूल में हो और इसी भूल में आकर मानव जात नाना धर्मों में बट गई तुम्हारे ध्यान की शक्ति है। जिस प्रकार मिसमरेजम वाला पहले काला निशान बना लेता है। उसे देखता रहता है मगर आँख नहीं झपकता। जब उसे फूल दिखाई देता है तो उसमें शक्ति आजाती है। जो कुछ है तुम्हारा अपना ही विचार है भाव तो केवल मन के ठहराने से है कि तुम्हारे मन की चंचलताई दूर हो जाये। मेरा मन महा चंचल था। दाता ने मुझे एक तम्बूरा दे दिया और चार तारों में सुर करना बता दिया। उन्होंने इस प्रकार मेरे मन का इलाज किया। मेरा मन चंचल तो होना ही था क्योंकि मेरा विवाह तेरह साल की आयु में होगया था और सोलह साल की आयु में ग्रहस्थ में फँस गया था। गुरु किसी को प्रकृति को (Study) करके अच्छी प्रकार जानता है कि उसके मन के अन्तर क्या है और उसका इलाज कैसे किया जाये। इसलिए कहा गया है कि अपने मन का सारा हाल समाचार गुरु को बता देना चाहिए।

पाप पुन पलता भये, सूरत भई डाँडी।
ज्ञान दुसेरी डारि के, पूरा कर पाई॥

पाप पुन्य तराजू के दो पलड़े हैं और सुख डन्डी है। उनको बराबर करने के लिये ज्ञान का दो सेरा डाल। इन सन्तों ने ऐसी वाणी कही है कि कोई समझ न सके। पाप और पुन्य क्या है? तुम्हारे अपने मन के विचार ही पाप पुन्य हैं। तुम एक चीज को पाप समझते हो उसका प्रभाव पाप का होगा जिसे तुम पुन्य समझते हो उसका प्रभाव पुन्य होगा। पाप पुन्य समय अनुसार बदलते रहते हैं। पहले जमाने में हिन्दुओं में एक राजा होता था। उसे ईश्वर का रूप समझते थे और उसका मान और आज्ञा ऐसी मानी जाती थी जैसे परमात्मा की आज्ञा हो। मगर भाव क्या है? अब राजाओं अर्थात प्रधान मंत्रियों के पुतले जलाये जाते हैं और उनकी

फोटो को पीटा जाता है। अब लोग इसे पसन्द करते हैं। वे पसन्द नहीं करते। पाप पुन्य विचार का है। वह कहते हैं इसे ज्ञान के दो सेरे से पूरा करो। वह ज्ञान क्या है? मुझे वह ज्ञान तुम लोगों से मिला। जब से मुझे यह विश्वास होगया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे पता लग गया कि मेरे अन्तर जो कुछ फुरना फुरती है, यह है नहीं केवल कल्पना और माया है क्योंकि यह कल्पना है इसलिये मैं इसमें नहीं फँसता। मेरे पास पाप पुन्य की कोई Value नहीं है मगर मैं मरयादा को नहीं तोड़ता। मैं जानता हूँ कि पाप पुन्य कुछ नहीं वरना आगे आने वाले भी मरयादा तोड़ेंगे। कृष्णजी ने भी अर्जुन को यही कहा है। तो मैं ज्ञान को यह समझता हूँ। मैं आप सत्संगियों का इतना उपकार मानता हूँ जितना कि शायद दाता दयाल का भी नहीं मानता हूं। दाता दयाल की दया है। उन्होंने यह काम इसीलिए दिया था कि जो कुछ मैं चाहता था वह मुझे मिल जाये, समझ आजाये और सचाई का पता लगजाये आप लोग मेरे सत्गुरु हैं, जिन्होंने आकर मुझे अपना अनुभव बताया।

कर सौदा घर को चले, रोका दरवानी

वह कहते हैं कि यह नाम का सौदा करके जब मरने लगे तो दरवान ने रोक लिया। यह दरवान कौन था? वह तुम्हारा मन था।

लेखा दे निज नाम का, कहँ का बैपारी।

जब आदमी मरते समय अन्तर जाता है तो मन उसके साथ होता है। जो कुछ उसने किया हुआ होता है वह उसके सामने आता है। क्योंकि उसने निज नाम को प्राप्त किया हुआ है कि यह सब कल्पना और माया है फिर क्या होता है—

पानीसी वाणी मही, गुरु छाप दिखाई।
इतना सुन कायल भये, जम सीस नवाई॥

जब आदमी मरने लगता है तो उसके सामने शक्लें, रूप या

कोई विचार आता है। क्योंकि उसने समझा हुआ है कि यह सब माया है वह उन शक्लों और रूपों की ओर नहीं खिचेगा क्योंकि गुरु का ज्ञान उसके सामने आयेगा कि यमराज आदि कुछ नहीं तो बे सब भाग जायेंगे। मैंने ऐसा समझा है मगर मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूँ यही ठीक है। मुझे पता नहीं कि कबीर का क्या ज्ञान है। अगर कबीर साहिब होते तो उनसे पूछता कि आपने इतनी बाणी रच दी लेकिन केवल महमे (समस्यायें) ही लिखकर गये।

सन्त चले सतलोक को छोड़ा संसारी।

किस संसार को छोड़ोगे? संसार सम और सार को कहते हैं। सम का अर्थ बराबर है। जो हमारे अन्तर असली वस्तु सार है उसके सामने जो कुछ आता है शक्लें रंग रूप वह संसार है। सार हम और तुम हो। तुम कौन हो? जो चीज तुम्हारे अन्तर प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह सार है। उसके सामने जो कुछ भी आता है वह संसार है जब तक यह संसार नहीं छूटेगा कोई आदमी भी इस माया और काल के चक्कर से नहीं निकल सकता। मेरा अपना पता नहीं कि मेरा क्या परिणाम हो। मगर इस समय मुझे खुशी है कि मैंने इस भेद को समझ लिया है। यद्यपि अब भी मेरा यह संसार है। मैं इस समय सत्संग करा रहा हूँ, यह माया नहीं तो और क्या है। मगर मैं इसमें फँसता नहीं। जब तक जीवन है संसार में रहो। तुम संसार से नहीं बच सकते हो न माया से दूर जा सकते हो। संसार से भाग कर कहाँ जाओ? जब तक तुम्हारा मन है कुछ न कुछ सोचता रहेगा मगर इसके रूप को समझकर इसमें न फँसना ही सार भेद है यही जीवन मुक्त अवस्था है और यही सारे धर्मों का परिणाम है—

कुन्दन भये दरबार में, प्रभु नगर गुजारी।
कहै कबीर बैठो सहो, सिख लेहु हमारी।
काल कल्प व्यापै नहीं, इहै नफा तुम्हारी।

कबीर साहिब कह रहे हैं कि भाई ! मेरी नसीहत (उपदेश) को मानो। तुम्हें नाम का यही लाभ होगा कि तुम्हें काल कर्म नहीं व्यापेगा। काल समय को कहते हैं। समय का प्रभाव तुम्हारे विचार भाव तुम्हें नहीं फँसायेंगे बल्कि पार ले जायेंगे। मैंने आपको बहुत कुछ बता दिया, कोई कसर नहीं छोड़ी, संसार के रूप को समझ कर इसमें न फँसना ही सार है। यह मेरा कर्म भोग है। जो कुछ मेरी समझ में आया और मैंने जीवन में सीखा, वह बता दिया। दूसरे मैं शुभ भावना देता हूँ कि जिस जिस इच्छा को लेकर तुम आते हो वह पूरी हो।

मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा जो कुछ मेरी समझ में आयेगा बता जाऊँगा। मैंने किसी पर उपकार नहीं किया। मेरा कर्म था मैं भोगता हूं। मगर यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने कहा है यही ठीक है। मेरा कर्तव्य था, मैंने पूरा किया। मैं इस काम से सुखी नहीं हूं। मैं आपको सच कहता हूँ और हित कर रहा हूं। मगर मेरा कर्म है दूसरे दाता दयाल की आज्ञा है कि शिक्षा को बदल जाना।

—०—

राधास्वामी दयाल की दया ! राधास्वामी सहाय !!

परमार्थ सुधार

परमार्थ क्या है ?

कुण्डलियाँ

परमा र्थ का सार, साध कोई बिरला जाने

१—बिरला जाने साध, करै सतगुरु की सेवा ।
सेवा के परताप, मिटै सब भर्म का भेवा ॥
२—भेव भेद को त्याग, न राखे मन में शंका ।
धर विवेक चित माँह, चढ़ै त्रिकुटी गढ़ लंका ॥ २ ॥
३—लंका चढ दससीस, रजोगुण रावण मारे ।
कुम्भकरण तम त्याग, विभीषण सत् को धारे ॥ ३ ॥
४—मेघनाद को जीत, शब्द के चढे विमाने ।
परमारथ का सार, साध को विरला जाने ॥ ४ ॥

परमार्थ क्या है ? प मार्थ संस्कृत के दो शब्दों 'परम' (बड़ा) और 'अर्थ' (उद्देश) से निकला है । जो मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा उद्देश है उसी को परमार्थ कहते हैं ।

मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है ? मनुष्य जीवन का सब से बड़ा उद्देश यह है कि वह दुखों से पूर्ण रीति से मुक्ति हो जाये और सुख के अतिरिक्त उसकी दृष्टि और किसी ओर न रहे यह सुख अखण्ड अपार और अनन्त हो, स्वाधीन हो, स्वाभाविक हो और बिना किसी सहायता के उसे इस प्रकार प्राप्त हो जाये कि फिर उसे कभी दुख का खटका चित्त में न आने पाये और चाहे वह किसी दशा में रहे परन्तु सुखी और आनन्दित रहे । यह परमार्थ है । इसके अतिरिक्त और कोई भी परमार्थ नही है ।

इस विषय में सारे शास्त्र, वेद पुराण, योगी, ज्ञानी और ऋषि मुनि की एक सम्मति है । शास्त्र कहते है :— "सर्व्व दुःख निवृति

परमानन्द प्राप्ति पुरुष पुरुषार्थः" अर्थात् 'सारे दुखों का अन्त कर देना और सबसे बड़े सुख को प्राप्त करना मनुष्य का मुख्य उद्देश है।'

परमार्थ की समझ तो इस संक्षेप कथन से भली भांति आ गई होगी। अब यदि किसी और बात में भेद है तो यह है कि उसके प्राप्ति के साधन क्या हैं? अगले अध्यायों में यह बात बड़ी उत्तमता के साथ समझाई जायेगी जिसका संकेत कुण्डलियों में दे दिमा गया

———

सुख

कुण्डलियाँ

सुख परमारथ सार, सार लख पावे कोई

१— लख पावे कोई पुरुष, जो होय सयाना।
तज अज्ञान विकार, विचारे गुरु का ज्ञाना॥ १ ॥

२ — ज्ञान ध्यान के संग, परम पद आशा लावे।
आशा मन में लाय, शून्य पद जाय समावे॥ २ ॥

३— शून्य समाध लगाय, दसम दर पाट खुलाई।
मन के सकल विकल्प, त्याग करे शब्द कमाई॥ ३ ॥

४—शब्द में वृत्ती जोड़, रूप है उसका सोई।
सुख परमारथ सार, सार लख पावे कोई॥ ४ ॥

सुख क्या है? सुख अपने रूप और स्वरूप का नाम है। यह संस्कृत धातु "सु" (अच्छा) और 'ख" (इन्द्री, आकाश, ज्ञान, आनन्द शून्य, अन्तरिक्ष' बिन्दु, काम, ब्रह्म, आत्मा इत्यादि इत्यादि) से निकला है। इसके मौलिक अर्थ पर विचार करो तो अभी तुम्हारी समझ में आजाये कि तुम्हारे आत्मस्वरूप के अतिरिक्त और कोई

वस्तु सुख नहीं है। तुम आप अच्छे ब्रह्म, अच्छे ज्ञान, अच्छे आ
और अच्छे आत्मा हो।

तुम भ्रम में पड़कर और वस्तुओं में सुख ढूढ़ते हो। कोई धन में सुख खोजता है। कोई पुस्तकों के पृष्ठों में आनन्द का खोजी है। कोई स्त्री प्रसंग में सुख ढूढ़ता है। यह भूल है और भ्रम की बातें हैं परन्तु यदि विचार करो तो सुख के समझने का भूल तत्व समझ में आ जाय। तुम क्यों प्रत्येक वस्तु में सुख की खोज करते हो ? इसका कारण यह है कि सुख तुम में है और प्रत्येक काम में उसी का व्यवहार हो रहा है। यदि तुम में सुख न होता तो इन वस्तुओं में तुम्हें सुख का विश्वास भी न होता। पानी की मछली पानी का रूप बनी हुई पानी ही में प्रसन्न रहती है। इसी पकार तुम सुख के समुद्र की मछली और सुख के रूप बने हुए सुख ही की खोज में दिन रात पड़े रहते हो। थोड़ा सा भ्रम है और वह भी केवल नाम मात्र है। कस्तूरिया हिरन समझता है कि सुगन्धि उसे बाहर से मिल रही है और वह उसे ढूढ़ता हुआ इधर उधर मारा मारा फिरता है वास्तव में कस्तूरी और उसकी सुगन्धि उसमें और उसकी नाभि में है। इसी प्रकार तुम भी सुख के हिरन हो और इधर उधर सुख के भ्रम में नाना प्रकार के व्यवहार और व्यौपार करते रहते हो। तुम को अपरी सुध नहीं रहती है। बेसुधी में यह काम काज हो रहे हैं और इसमें बुरा क्या है ? जो जैसा है वैसा ही तो करेगा और करता रहेगा। आग से गर्मी और पानी से ठंडक को किसने अलग किया इसी प्रकार तुमसे और तुम्हारे निज स्वरूप से सुख के भ्रम, विश्वास और विचार को कौन दूर कर सकता है। न ऐसा कभी हुआ न होगा और तुम किसी समय भी सुख से अलग और प्रथक नहीं हो सक यह तो तुम्हारा आत्म स्वरूप, तुम्हारा स्वभाव और तुम्हारा ध है। गुण सदैव गुणों ही में तो रहते हैं। वह और कहाँ रहेंगे।

जो कुछ करते बने, हाथ पाँव मारते हुए करते चलो। हम उसे बुरा नहीं कहते। हाँ थोड़ा सा अज्ञान है, उसे पालो और वह भी केवल नाम मात्र है। अज्ञान वास्तव में है नहीं इस अज्ञान के वश में आकर तुम चंचल बन गये हो। चंचल हो, अपने अनुभव को बढ़ाते चलो। भली भाँति हाथ पांव मारो। अन्त में आप ही समझ जाओगे कि जिसकी खोज में मारे मारे फिरते थे वह क्षण मात्र के लिये भी तुमसे अलग नहीं था और न अब अलग है।

—※—

धन

कुण्डलियां

सुख का चिंतन यों करो, जैसे लोभी दाम।
जैसे लोभी दाम, चित्त वाही में राखे।
गड़ा खजाना खाक में, नित धन धन भाखे ॥१॥
धन धन भाखे लालची, चिन्ता धन की राख।
धन दौलत की चाह है, यह गति मन की आख ॥२॥
यह गति मन की आख, रात दिन धन का ध्याना।
धन की लालच में फँसा, हर दम अज्ञाना ॥३॥
अज्ञाना को लालसा, धन से रखता काम।
सुख का चिन्तन यों करो, जैसे लोभी दाम ॥४॥

धन के कमाने में हर्ज नहीं। परिश्रम और यत्न करो। व्योपार और उद्यम से काम रक्खो। नौकरी चाकरी को न छोड़ो केवल इतना समझ लो कि धन तुम्हारे लिये है और तुम धन के लिये नहीं हो और बस ! हम तुमको परमार्थ समझा देंगे।

परन्तु यदि यह समझ नहीं है तो फिर समझने में कुछ देर लगेगी और इस दशा में भी हम तुम पर तरस खाकर समझाने से पीछे न हटेंगे।

धन बिना परिश्रम हाथ नहीं आता। उसके लिये भी साधन के

साथ मन की गढ़त करनी होती है सबका सहना और सुनना पड़ता है और इस पर भी उसमें अपना कोई वश नहीं। पूरा पूरा धन बड़ी कठिनाई से किसी विर्ले को प्राप्त होता होगा।

धन मिलता है परन्तु कठिनाई से मिलता है और जितना ही मिलता है उतनी ही लालसा भी बढ़ती जाती है। सैकड़ों वालों का हजारों की. और हजारों वालों को लाखों की, और लाखों वालों को करोड़ों की इच्छा रहती है। कभी सन्तुष्टता नहीं आती।

लालसा और लालच के हाथ पाँव संभालते ही मनुष्य धन को भोग भी नहीं सकता। इधर उसके वियोग और छिन जाने का भय, उधर उसका भोग भी प्राप्त नहीं, दोनों ही बात दुखदाई हैं और, यह मन को बहुत ही चंचल बना देती है। यह एक बात है।

धन मिल गया। अब वह डरा कि उससे कहीं छीन न लिया जाये। चोर का डर, सम्बन्धियों के धोके का भय हाकिमों के अत्याचारों का खटका, अहलकारों के घूँस लेने का ध्यान ! यह सब अनेक प्रकार के भय और दुख के कारण होते हैं। न किसी का विश्वास न किसी का भरोसा। ऐसा मनुष्य नीचा और अधम हो जाता है—'चमड़ी जाय तो जाय परन्तु दमड़ी न जाय।' यह दूसरी बात है।

धन वालों का मन प्रायः अपवित्र और मलीन होता है। उसके मन में पवित्रता शुद्धता और निर्मलता नाम मात्र भी नहीं होती। वह पशु के पशु बने रहते हैं। उनमें मनुष्यत्व का अभाव होता है। धन द्रव्य हाथ को काला करता है। धन के रात दिन के सुमिरन से मन भी मलीन और काला हो जाता है जब धन कमाने से छुट्टी मिले तब तो वह मन के सँवारने और सिंगारने की ओर ध्यान दें और मन में निर्मलता आये, 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।' यह तीसरी बात है।

धन वाले धूर्त, झूटे और चापलूस होते हैं। इसका कारण क्या है ? कारण यह है कि वह जने जने के वशीभूत और दास बने हुए

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

पाजी है।' जैसा वह कहता था वैसा ही सुनता था। अन्त में उसने कहा, मैं तो भला हूँ।'

उत्तर में सुना, 'मैं तो भला हूँ।' 'यदि तू भला है तो गाली क्यों देता है?' फिर उत्तर मिला, 'यदि तू भला है तो गाली क्यों देता है?

वह जो कुछ कहता था वही सुनता भी था। किसी बुद्धिमान मनुष्य ने उसको समझाया कि 'गुम्बद में दूसरा कोई नहीं है। तू अकेला है। तेरे ही शब्द तुझे लौट कर सुनाई देते हैं।' तब उसे विश्वास हुआ और वह चुप होगया।

इसी प्रकार यह संसार गुम्बददार मन्दिर है। जो तुम बोलते हो वही सुनते हो। स्तुति करो, स्तुति सुनोगे। निन्दा करो फिर निन्दा सुनोगे। यह मेरा तेरा पना, व्यवहार, परमार्थ लोक परलोक, भाई बन्धु, कुटुम्ब परिवार नौकरी चाकरी तुम्हारी ही कल्पना है। तुम्हीं ने इनको उत्पन्न किया, तुम्हीं ने यह सम्बन्ध जोड़ा। जब तक तुम कल्पना में हो यह कल्पनायें फुरती रहेंगी। तुम शान्त हो जाओ। इन सब में भी शान्ति आ जायेगी।

दृष्टान्त ३ — एक शीश महल में कोई कुत्ता चला गया। जिधर देखता है उधर कुत्ते ही कुत्ते दिखलाई देते हैं। कुत्ता इन्हें देखकर भूँकने लगा। शीश महल इसके भूँकने से गूँज उठा और वह भूँकते भूँकते मर गया।

इसी प्रकार अपने पराये की बेसमझी ने संसार में हर जगह ऊधम मचा रक्खा है। यदि किसी प्रकार यह पता लग जाये कि यह 'मेरा तेरा पना' केवल कल्पना मात्र है तो यह दशा देखते देखते मिट जायेगी। जब तक 'मेरा तेरा' का भाव मन में बना हुआ है! तब तक शान्ति का मिलना असम्भव है। इस भाव के होते हुए एकत्व भाव की समझ कैसे आ सकती है? एक समय में एक ही विचार तो काम करेगा।

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम	:	श्री श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय
मनुष्य बनो
शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 170

Chilwar Narsimhulu Book-Seller
P.O. Banswara
Nizamabad.
A.P.

सम्पादक— श्रीमती सुधा मीतल

व्यवस्थापक व प्रकाशक— श्रीमती सुधा मीतल
शिव भवन, लेखराज नगर,
अलीगढ़।

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh